**भारत सरकार**
**पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय**
**राज्य सभा**
**अतारांकित प्रश्न सं.1779**
**17 मार्च, 2022 को उत्तर दिए जाने के लिए**

**पानी की उपलब्धता का आकलन करने के लिए हिमालयी हिमनदों (ग्लेशियरों) की गहराई को मापा जाना**

**1779 डॉ. कनिमोझी एनवीएन सोमू:**

**क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः**

(क) क्या सरकार की पानी की उपलब्धता का आकलन करने के लिए हिमालयी हिमनदों (ग्लेशियरों) की गहराई को मापने की योजना है, यदि हां, तो इस मिशन को अंजाम देने और कार्यान्वित करने वाले प्राधिकरण का ब्यौरा क्या है;

(ख) इस मिशन के अंतर्गत हिमालय के किन-किन क्षेत्रों का अन्वेषण किया जाएगा और परियोजना के चरण-वार कार्यान्वयन का ब्यौरा क्या है; और

(ग) अनुसंधान के लिए कितनी धनराशि आवंटित किए जाने का प्रस्ताव है और मिशन में उपयोग की जाने वाली संभावित प्रौद्योगिकी का ब्यौरा क्या है?

**उत्तर**
**विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)**
**(डॉ. जितेंद्र सिंह)**

(**क**) हिमालयी हिमनद में संग्रहित जल की उपलब्धता का आकलन करने के लिए उन हिमनदों की मोटाई का आकलन किया जाना बहुत जरूरी है। कुछ हिमनदों की गहराई का आकलन करने के लिए भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) ने जियोफिजिकल तकनीकों एवं ग्राउंड पेनेट्रेटिंग रडार (GPR) प्रोफाइलिंग का प्रयोग किया है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अन्तर्गत, राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केन्द्र (एन.सी.पी.ओ.आर.) ने अन्तरराष्ट्रीय एजेंसियों एवं संभावित साझेदारों से सम्पर्क किया है, ताकि नवप्रवर्तनशील एयरबॉर्न रडार सर्वे तकनीक विकसित एवं प्रदर्शित की जा सके, जो भारत में उपलब्ध नहीं है, और यह कहीं और भी वाणिज्यिक रूप से उपलब्ध नहीं है। प्रौद्योगिकी परिपक्व होने के साथ ही इस कार्य को शुरु किया जाएगा।

(**ख**) प्रौद्योगिकी परिपक्व होने के बाद यह निर्णय लिया जाएगा कि हिमालय के किन-किन क्षेत्रों का अन्वेषण किया जाना है।

(**ग**) कोई विशिष्ट धनराशि आवंटित नहीं की गई है।

*****